Result Mitra IAS/PCS Daily Magazine Content

सावित्रीबाई फुले

चर्चा में क्यों ?

- 3 जनवरी को "भारतीय नारीवाद की जननी" सावित्रीबाई फुले के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है।
- सावित्रीबाई फुले जिन्हें एक समाज सुधारक, एक दलित आइकन, एक शिक्षाविद और एक कवयित्री के रूप में जाना जाता है, ने अपना पूरा जीवन भारत में महिलाओं और दबे-कुचले समुदायों के अधिकार के लिए संघर्ष करने में व्यतीत कर दिया।
- *** सावित्रीबाई फुले ने 19वीं सदी में भारत में शिक्षा, लैंगिक समानता और सामाजिक सुधार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

जीवनी :

- ** सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 ई. को महाराष्ट्र के नयागांव में एक "माली" परिवार में हुआ था।
- सावित्रीबाई फुले जिनके पिता का नाम खंडोजी नेवेशे पाटिल और माता का नाम लक्ष्मीबाई था, अपने घर की सबसे बड़ी बेटी थी।
- वर्ष 1840 में जब भारत में "बाल विवाह" आम था, में सावित्रीबाई फुले का विवाह 10 वर्ष की उम्र में ज्योतिराव फुले से हुआ।
- सावित्रीबाई फुले की शिक्षा उनकी शादी के बाद शुरू हुई तथा ऐसा कहा जाता है कि उनके पति ज्योतिराव फुले ने उन्हें घर पर ही शिक्षा दी थी।
- घर में प्राथमिक शिक्षण पूरा करने के बाद ज्योतिराव फुले ने सावित्रीबाई को पुणे के एक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में भर्ती कराया।
- *** ऐसे समय में जब भारत में महिलाओं के लिए शिक्षा प्राप्त करना भी अस्वीकार्य माना जाता था, उस समय सावित्रीबाई फुले ने अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर वर्ष 1848 ई. में पुणे के भिड़ेवाला में लड़कियों के लिए एक स्कूल खोला, जो देश में लड़कियों के लिए पहला स्कूल बन गया।
- *** सावित्रीबाई फुले ने आगे चलकर पुणे में लड़कियों, शूद्रों और अति-शूद्रों (पिछड़ी जातियों और दलितों) के लिए और अधिक स्कूल खोले, जिससे बाल गंगाधर तिलक जैसे भारतीय राष्ट्रवादियों में असंतोष फैल गया।
- सावित्रीबाई फुले और ज्योतिराव फुले के विरुद्ध विद्रोह इतना अधिक बढ़ गया कि अंततः ज्योतिराव के पिता गोविंदराव को सावित्रीबाई और ज्योतिराव फुले को घर से निकालने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- *** लगातार हो रहे विद्रोह के बीच में निडर होकर सावित्रीबाई ने अपने पति के साथ मिलकर हाशिए पर पड़ी जातियों के लिए 18 स्कूलों की स्थापना की।
- *** इसके अलावा सावित्रीबाई फुले ने अपने पति के साथ मिलकर गर्भवती विधवाओं और यौन उत्पीड़न से पीड़ित महिलाओं की देखभाल के लिए बाल हत्या प्रतिबंधक गृह (शिशुहत्या की रोकथाम के लिए घर) नामक एक केंद्र खोला, ताकि वे अपने बच्चों को सुरक्षित रूप से जन्म दे सकें।

- * सावित्रीबाई फुले प्रथम स्मारक व्याख्यान, एनसीईआरटी (NCERT, 2008) के अनुसार वर्ष 1884 तक सावित्रीबाई फुले द्वारा स्थापित बालहत्या प्रतिबंधक गृह में लगभग 35 ब्राह्मण विधवाएं अलग-अलग स्थान से आई, जहां स्वयं सावित्रीबाई फुले ने उनके बच्चों के जन्म एवं देखभाल में मदद की।
- सावित्रीबाई एक जैविक बुद्धिजीवी और आलोचनात्मक शिक्षिका थी, जो महिलाओं के लिए शिक्षा के मुक्तिदायक मूल्य की प्रतीक थी।
- सावित्रीबाई फुले की शिक्षाशास्त्र महिलाओं के उत्थान पर केंद्रित था, जिसका उद्देश्य उन्हें जाति और पितृसत्ता के चंगुल से मुक्त कराना था।
- महिलाओं पर लिखी सावित्रीबाई की कविता में यह स्पष्ट है कि कैसे महिलाओं को मातृत्व, गृहस्थी और गृहस्थ जीवन तक सीमित रखना उनकी पूरी क्षमता के लिए हानिकारक हो सकता है।
- सावित्रीबाई फुले को अक्सर रूढ़िवादी मानसिकता के पुरुषों का सामना करना पड़ता था, जो जानबूझकर उन पर भद्दे कमेंट करते और उन पर गोबर और पत्थर फेंकते थे।
- सावित्रीबाई पर रूढ़िवादी मानसिकता के पुरुषों द्वारा किया जाने वाला अत्याचार इतना बढ़ गया कि वो स्कूल जाते समय अपने साथ एक अतिरिक्त साड़ी ले जाती थी क्योंकि रास्ते में उन पर पत्थर और गोबर से हमले के कारण उनके कपड़े खराब हो जाते थे।
- हालांकि इतने उत्पीड़न के बाद भी सावित्रीबाई को महिला शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के अपने दूरदर्शी उद्देश्यों से कोई फर्क नहीं पड़ा और वे आगे निडर होकर इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए काम करते रहे।
- सावित्रीबाई फुले ने अन्य सामाजिक मुद्दों के अलावा अंतरजातीय विवाह, विधवा पुनर्विवाह तथा बाल विवाह, सती प्रथा और दहेज प्रथा के उन्मूलन की भी वकालत की।
- फु ले दंपति ने एक विधवा के बच्चे यशवंतराव को गोद लिया, जिसे डॉक्टर बनने के लिए शिक्षित किया।
- *** 24 सितंबर 1873 ई. में ज्योतिराव–सावित्रीबाई तथा अन्य समान विचारधारा वाले लोगों द्वारा सत्यशोधक समाज की स्थापना की गई।

- सावित्रीबाई फुले समाज के प्रति अत्यंत भावुक और समर्पित कार्यकर्ता थी, जिन्होंने उन सामाजिक परिवर्तनों की वकालत की जो प्रचलित परंपराओं के विरुद्ध थी, जिनमें कम खर्चीली शादियां, अंतरजातीय विवाह, बाल विवाह का उन्मूलन और विधवा पुनर्विवाह शामिल थे।
- *** वर्ष 1877 के अकाल के दौरान सावित्रीबाई फुले ने अकाल पीड़ित बच्चों के लिए 52 खाद्य शिविर स्थापित करके अपने लोगों को सेवाएं दी।
- सावित्रीबाई फुले धनकवाड़ी में भोजन शिविर की खुद देखभाल करती थी जहां प्रतिदिन औसतन 2000 से अधिक भाखरी (ज्वार की रोटी) बनाई जाती थी।
- 1890 में सावित्रीबाई के पति ज्योतिराव का निधन हो गया, जिसमें सावित्रीबाई ने सभी सामाजिक रीति–रिवाजों की अवहेलना करते हुए अपने पति के अंतिम संस्कार का नेतृत्व किया।
- *** 1897 के पूना में बुबोनिक प्लेग महामारी के दौरान राहत कार्य संभालते हुए सावित्रीबाई इस बीमारी के चपेट में आ गई, जिसके कारण 10 मार्च 1897 को उनका निधन हो गया।
- *** मार्च 1988 में सावित्रीबाई फुले के सम्मान में भारतीय डाक सेवाओं ने एक डाक टिकट जारी किया और इसके 17 वर्ष बाद सावित्रीबाई फुले के सम्मान में पुणे विश्वविद्यालय का नाम बदलकर सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय कर दिया गया।

MCQ–1 : सावित्रीबाई फुले के संबंध में निम्न कथनों पर विचार करके सही विकल्प चुने–

कथन–1 : सावित्रीबाई फुले ने अपने पति के साथ मिलकर 1848 ई. में पुणे के भिड़ेवाडा में लड़कियों के लिए भारत का पहला विद्यालय खोला।

कथन–2 : सावित्रीबाई ने गर्भवती महिलाओं और यौन उत्पीड़न से पीड़ित महिलाओं के बच्चों को सुरक्षित जन्म और देखभाल के लिए "बालहत्या प्रतिबंधक गृह" खोला।

कथन–3 : सावित्रीबाई को उनके सामाजिक कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए सभी वर्गों का समर्थन मिला।

a) तीनों कथन सही है।
b) केवल कथन 1 सही है।
c) कथन 1 और 2 सही है।
d) तीनों कथन गलत है।

Ans.–(c)

Mains–1 : महाराष्ट्र में महिलाओं और दबे–कुचले समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष करने में सावित्रीबाई फुले के योगदान का उल्लेख करें।

Result Mitra

हम आपको रिजल्ट देने आये हैं.

Result Mitra

1- UPSC(IAS) COMPLETE GS -5999 ₹.

2- NCERT for IAS/PCS -2499 ₹

3- ESSAY for IAS/PCS- 2199 ₹

4- UPSC PRELIMS TEST SERIES - 1399 ₹

5- सभी राज्यों के लिए टेस्ट सीरीज - 1399 ₹

कोर्स या Test Series के लिए

WhatssApp कीजिये

9235313184, 9235446806